



Title	『フフ・トグ/青旗』（1943年） 第88号（1月3日）
Author(s)	
Citation	OUFCブックレット. 2019, 14-1, p. 3-10
Version Type	VoR
URL	https://hdl.handle.net/11094/73198
rights	
Note	

The University of Osaka Institutional Knowledge Archive : OUKA

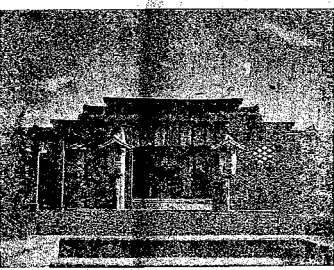
<https://ir.library.osaka-u.ac.jp/>

The University of Osaka



کتاب دهر ستریا در ویتنام و
تجربیات من در آن

کتاب دهر ستریا در ویتنام و تجربیات من در آن، اثر دکتر ستریا در ویتنام، که در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است. در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است. در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است.



کتاب دهر ستریا در ویتنام و تجربیات من در آن، اثر دکتر ستریا در ویتنام، که در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است. در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است. در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است.

کتاب دهر ستریا در ویتنام و تجربیات من در آن، اثر دکتر ستریا در ویتنام، که در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است. در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است. در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است.

کتاب دهر ستریا در ویتنام و تجربیات من در آن، اثر دکتر ستریا در ویتنام، که در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است. در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است. در این کتاب به بیان تجربیات خود در ویتنام پرداخته است.

民國十年一月三日

第 882 號

(本報第三十三頁)

(2)

新學期之教育方針

教育者之責任。在於培養健全之國民。而健全之國民。必須具備健全之身體。健全之思想。健全之道德。健全之技能。此四者。乃教育之基本。而新學期之教育方針。應以此四者為標準。而制定之。茲將新學期之教育方針。分述如下：

一、健全之身體。身體為教育之基礎。若身體不健全。則思想、道德、技能。皆無從培養。故教育者。應注重學生之身體健康。並教授學生體育。以培養其健全之身體。

二、健全之思想。思想為教育之靈魂。若思想不健全。則道德、技能。皆無從培養。故教育者。應注重學生之思想培養。並教授學生智育。以培養其健全之思想。

三、健全之道德。道德為教育之核心。若道德不健全。則身體、思想。皆無從培養。故教育者。應注重學生之道德培養。並教授學生德育。以培養其健全之道德。

四、健全之技能。技能為教育之實效。若技能不健全。則身體、思想、道德。皆無從培養。故教育者。應注重學生之技能培養。並教授學生體育。以培養其健全之技能。

新學期之教育方針

教育者之責任。在於培養健全之國民。而健全之國民。必須具備健全之身體。健全之思想。健全之道德。健全之技能。此四者。乃教育之基本。而新學期之教育方針。應以此四者為標準。而制定之。茲將新學期之教育方針。分述如下：

一、健全之身體。身體為教育之基礎。若身體不健全。則思想、道德、技能。皆無從培養。故教育者。應注重學生之身體健康。並教授學生體育。以培養其健全之身體。

二、健全之思想。思想為教育之靈魂。若思想不健全。則道德、技能。皆無從培養。故教育者。應注重學生之思想培養。並教授學生智育。以培養其健全之思想。

三、健全之道德。道德為教育之核心。若道德不健全。則身體、思想。皆無從培養。故教育者。應注重學生之道德培養。並教授學生德育。以培養其健全之道德。

四、健全之技能。技能為教育之實效。若技能不健全。則身體、思想、道德。皆無從培養。故教育者。應注重學生之技能培養。並教授學生體育。以培養其健全之技能。

新學期之教育方針

教育者之責任。在於培養健全之國民。而健全之國民。必須具備健全之身體。健全之思想。健全之道德。健全之技能。此四者。乃教育之基本。而新學期之教育方針。應以此四者為標準。而制定之。茲將新學期之教育方針。分述如下：

一、健全之身體。身體為教育之基礎。若身體不健全。則思想、道德、技能。皆無從培養。故教育者。應注重學生之身體健康。並教授學生體育。以培養其健全之身體。

二、健全之思想。思想為教育之靈魂。若思想不健全。則道德、技能。皆無從培養。故教育者。應注重學生之思想培養。並教授學生智育。以培養其健全之思想。

三、健全之道德。道德為教育之核心。若道德不健全。則身體、思想。皆無從培養。故教育者。應注重學生之道德培養。並教授學生德育。以培養其健全之道德。

四、健全之技能。技能為教育之實效。若技能不健全。則身體、思想、道德。皆無從培養。故教育者。應注重學生之技能培養。並教授學生體育。以培養其健全之技能。

新學期之教育方針

教育者之責任。在於培養健全之國民。而健全之國民。必須具備健全之身體。健全之思想。健全之道德。健全之技能。此四者。乃教育之基本。而新學期之教育方針。應以此四者為標準。而制定之。茲將新學期之教育方針。分述如下：

一、健全之身體。身體為教育之基礎。若身體不健全。則思想、道德、技能。皆無從培養。故教育者。應注重學生之身體健康。並教授學生體育。以培養其健全之身體。

二、健全之思想。思想為教育之靈魂。若思想不健全。則道德、技能。皆無從培養。故教育者。應注重學生之思想培養。並教授學生智育。以培養其健全之思想。

三、健全之道德。道德為教育之核心。若道德不健全。則身體、思想。皆無從培養。故教育者。應注重學生之道德培養。並教授學生德育。以培養其健全之道德。

四、健全之技能。技能為教育之實效。若技能不健全。則身體、思想、道德。皆無從培養。故教育者。應注重學生之技能培養。並教授學生體育。以培養其健全之技能。

新學期之教育方針

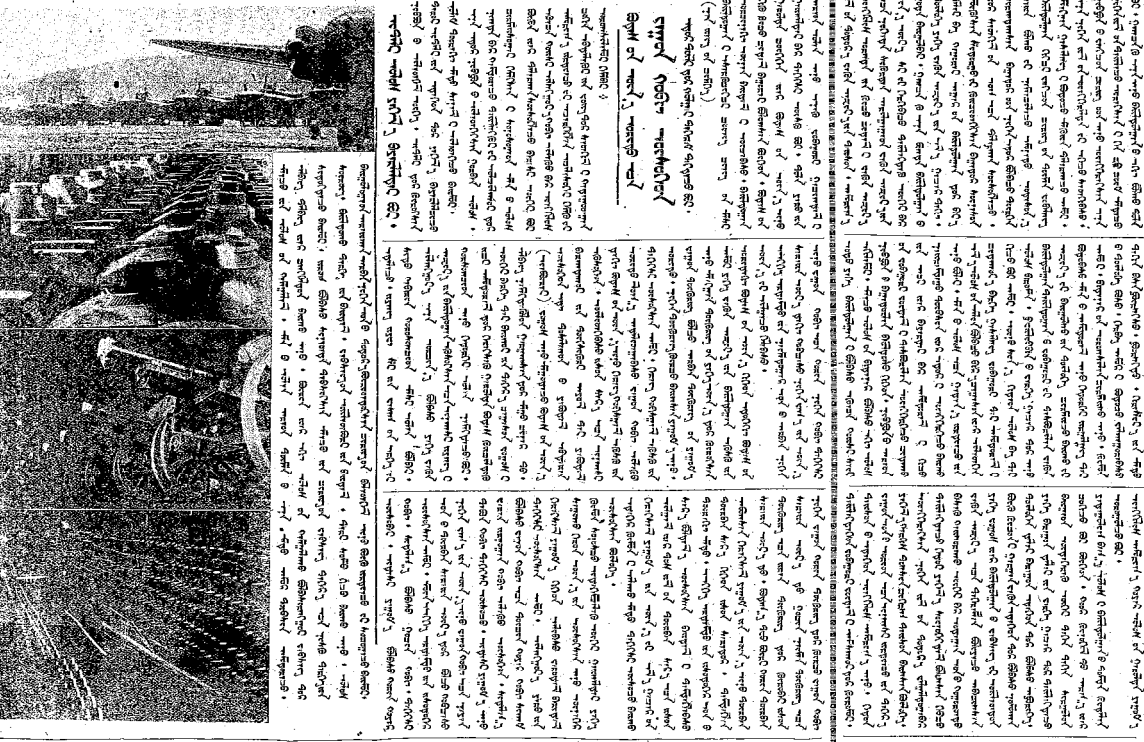
教育者之責任。在於培養健全之國民。而健全之國民。必須具備健全之身體。健全之思想。健全之道德。健全之技能。此四者。乃教育之基本。而新學期之教育方針。應以此四者為標準。而制定之。茲將新學期之教育方針。分述如下：

一、健全之身體。身體為教育之基礎。若身體不健全。則思想、道德、技能。皆無從培養。故教育者。應注重學生之身體健康。並教授學生體育。以培養其健全之身體。

二、健全之思想。思想為教育之靈魂。若思想不健全。則道德、技能。皆無從培養。故教育者。應注重學生之思想培養。並教授學生智育。以培養其健全之思想。

三、健全之道德。道德為教育之核心。若道德不健全。則身體、思想。皆無從培養。故教育者。應注重學生之道德培養。並教授學生德育。以培養其健全之道德。

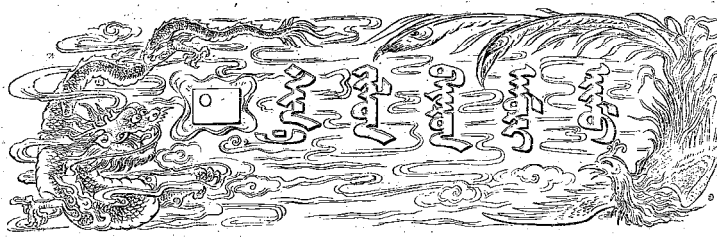
四、健全之技能。技能為教育之實效。若技能不健全。則身體、思想、道德。皆無從培養。故教育者。應注重學生之技能培養。並教授學生體育。以培養其健全之技能。



此項工程。係由某公司承包。現已進行至中盤階段。預計於明年完工。此項工程之完成。將對當地之經濟發展。產生重大之貢獻。茲將該公司之負責人。及該工程之詳細情況。分述如下：

一、該公司之負責人。為某先生。該先生。具有多年之建築經驗。曾參與多項大型工程之建設。現由該先生負責該工程之設計及施工。

二、該工程之詳細情況。該工程。係一棟大型之商業建築。建築面積為若干平方米。建築高度為若干層。該工程之設計。係由某建築師負責。設計風格。係現代化之商業建築風格。該工程之施工。係由該公司負責。施工進度。係按計劃進行中。



1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812	813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836	837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860	861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884	885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908	909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932	933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956	957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980	981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------

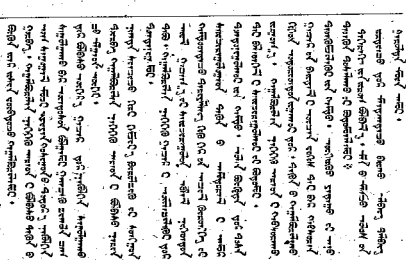
民國十一年一月三日

کتابخانه سنجی در کابل



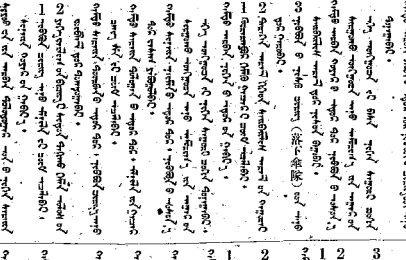
کتابخانه سنجی در کابل، که در سال ۱۳۱۰ خورشیدی تأسیس شد، یکی از مراکز مهم فرهنگی و علمی در افغانستان است. این کتابخانه با هدف جمع‌آوری و نگهداری کتب ارزشمند و ترویج مطالعه در میان دانش‌آموزان و محققان تأسیس گردید. در حال حاضر، این کتابخانه دارای مجموعه‌ای گسترده از کتب فارسی، دری و انگلیسی است که در زمینه‌های مختلف علمی و ادبی پوشش می‌دهد. همچنین، این مرکز به عنوان یک سالن مطالعه برای دانشجویان و محققان نیز فعالیت می‌کند.

کتابخانه سنجی در کابل



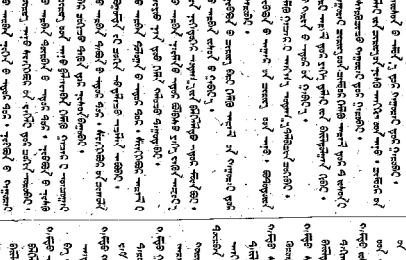
کتابخانه سنجی در کابل، که در سال ۱۳۱۰ خورشیدی تأسیس شد، یکی از مراکز مهم فرهنگی و علمی در افغانستان است. این کتابخانه با هدف جمع‌آوری و نگهداری کتب ارزشمند و ترویج مطالعه در میان دانش‌آموزان و محققان تأسیس گردید. در حال حاضر، این کتابخانه دارای مجموعه‌ای گسترده از کتب فارسی، دری و انگلیسی است که در زمینه‌های مختلف علمی و ادبی پوشش می‌دهد. همچنین، این مرکز به عنوان یک سالن مطالعه برای دانشجویان و محققان نیز فعالیت می‌کند.

کتابخانه سنجی در کابل



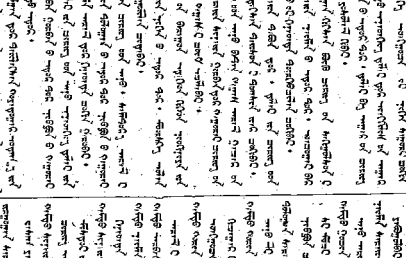
کتابخانه سنجی در کابل، که در سال ۱۳۱۰ خورشیدی تأسیس شد، یکی از مراکز مهم فرهنگی و علمی در افغانستان است. این کتابخانه با هدف جمع‌آوری و نگهداری کتب ارزشمند و ترویج مطالعه در میان دانش‌آموزان و محققان تأسیس گردید. در حال حاضر، این کتابخانه دارای مجموعه‌ای گسترده از کتب فارسی، دری و انگلیسی است که در زمینه‌های مختلف علمی و ادبی پوشش می‌دهد. همچنین، این مرکز به عنوان یک سالن مطالعه برای دانشجویان و محققان نیز فعالیت می‌کند.

کتابخانه سنجی در کابل



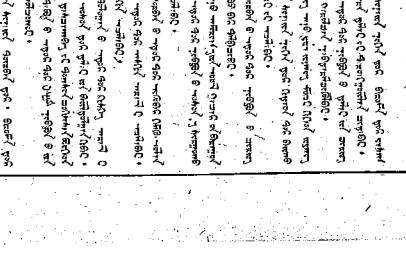
کتابخانه سنجی در کابل، که در سال ۱۳۱۰ خورشیدی تأسیس شد، یکی از مراکز مهم فرهنگی و علمی در افغانستان است. این کتابخانه با هدف جمع‌آوری و نگهداری کتب ارزشمند و ترویج مطالعه در میان دانش‌آموزان و محققان تأسیس گردید. در حال حاضر، این کتابخانه دارای مجموعه‌ای گسترده از کتب فارسی، دری و انگلیسی است که در زمینه‌های مختلف علمی و ادبی پوشش می‌دهد. همچنین، این مرکز به عنوان یک سالن مطالعه برای دانشجویان و محققان نیز فعالیت می‌کند.

کتابخانه سنجی در کابل



کتابخانه سنجی در کابل، که در سال ۱۳۱۰ خورشیدی تأسیس شد، یکی از مراکز مهم فرهنگی و علمی در افغانستان است. این کتابخانه با هدف جمع‌آوری و نگهداری کتب ارزشمند و ترویج مطالعه در میان دانش‌آموزان و محققان تأسیس گردید. در حال حاضر، این کتابخانه دارای مجموعه‌ای گسترده از کتب فارسی، دری و انگلیسی است که در زمینه‌های مختلف علمی و ادبی پوشش می‌دهد. همچنین، این مرکز به عنوان یک سالن مطالعه برای دانشجویان و محققان نیز فعالیت می‌کند.

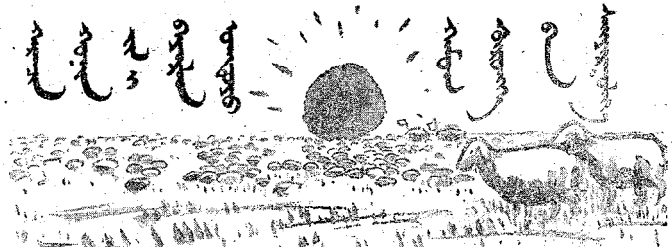
کتابخانه سنجی در کابل



کتابخانه سنجی در کابل، که در سال ۱۳۱۰ خورشیدی تأسیس شد، یکی از مراکز مهم فرهنگی و علمی در افغانستان است. این کتابخانه با هدف جمع‌آوری و نگهداری کتب ارزشمند و ترویج مطالعه در میان دانش‌آموزان و محققان تأسیس گردید. در حال حاضر، این کتابخانه دارای مجموعه‌ای گسترده از کتب فارسی، دری و انگلیسی است که در زمینه‌های مختلف علمی و ادبی پوشش می‌دهد. همچنین، این مرکز به عنوان یک سالن مطالعه برای دانشجویان و محققان نیز فعالیت می‌کند.



青



青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗

青
旗